१७७. कोई न सचको जाने

दोहा : *सीमित हमारा ग्यान ध्यान और असीम हमरा स्वार्थ*
हर घटनापर निकालते हम तऱ्हातऱ्हाका अर्थ ॥

कोई नही, कोई नही, कोई न सचको जाने ।
मेहेर सबही जाने ॥धृ.॥

उँचा, नीचा, ग्यानी, अग्यानी, छोटा, नम्र बडा अभिमानी ।
दूर है, पास है गलत सही है, कौन इसे पहचाने ॥१॥

रामका काम तो रामसे होगा, कृष्णकी लीला कृष्ण रचेगा ।
अपना अपना काम अलग है, काहे इसे ना माने ॥२॥

हँसना गाना ध्यान लगाना, प्रेमसे अपनी धूनी रमाना ।
सुनकर पढकर सत्य परखना, राज यही दीवाने ॥३॥

मधुसूदन ये भरमकी पीडा, नही छुटती है सबही बिगाडा ।
प्रेमही देना प्रेमही लेना, और है क्या समझाने ॥४॥

Scanned by CamScanner